श्रीभगवान् कहते हैं कि दुष्ट कर्म करने वाला उनका भक्त नहीं बन सकता। जो भक्त नहीं है, उसमें कोई सद्गुण नहीं होता। इस पर यह प्रश्न शेष रहता है कि स्वेच्छा से या दुर्घटना के कारण पापकर्म में प्रवृत्त हुआ मनुष्य शुद्धभक्त कैसे हो सकता है? वर्तमान सन्दर्भ में यह जिज्ञासा ठीक भी है। जैसा सातवें अध्याय में उल्लेख है, जो दुष्ट सदा भगवद्भक्ति से विमुख रहते हैं, उनमें श्रीमद्भागवत के अनुसार कोई सद्गुण नहीं होता। नवधा भक्ति का साधक सम्पूर्ण प्राकृत दोषों से हृदय को शुद्ध करने में संलग्न है। वह श्रीभगवान् को अपने हृदयकमल पर अभिराजित कर लेता है, जिससे सभी पापमय दोषों का अपने-आप परिमार्जन हो जाता है। निरन्तर भगवच्चिन्तन के प्रभाव से उसका स्वभाव निर्मल बन जाता है। वेदों में विधान है कि परमार्थ के पथ से भ्रष्ट हुआ पुरुष अन्तःकरण की शुद्धि के लिए प्रायश्चित करे। किन्तु यहाँ ऐसा कोई विधान नहीं किया गया है, क्योंकि भक्त के हृदय में निरन्तर भगवच्चिन्तन रूपी शुद्धि का साधन पहले से ही विद्यमान है। अतएव **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** महामन्त्र का निरन्तर कीर्तन करते रहना चाहिए। इसके द्वारा भक्त की सभी प्रासंगिक पतनों से रक्षा हो जायगी और वह सम्पूर्ण प्राकृत विकारों से सदा मुक्त रहेगा।

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्।।३२।।

माम्=मेरे; **हि**=निस्सन्देह; **पार्थ**=हे पृथापुत्र अर्जुन; **व्यपाश्रित्य**=अनन्य भाव से शरणागत होकर; **ये**=जो कोई; **अपि**=भी; **स्युः**=हों; **पापयोनयः**=पापयोनि वाले; **स्त्रियः**=स्त्रियाँ; **वैश्याः**=वैश्य; **तथा**=भी; **शूद्राः**=शूद्र; **ते अपि**=वे भी; **यान्ति**=प्राप्त होते हैं; **पराम्**=परम; **गतिम्**=गति को।

अनुवाद

हे पार्थ! मेरी शरण होकर तो पापयोनि वाले, स्त्री, वैश्य और शूद्र भी परम गति को प्राप्त हो जाते हैं।।३२।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् ने इस श्लोक में स्पष्ट घोषणा की है कि भक्तियोग में सभी का समान अधिकार है, इसमें जाति-पाँति का भेद नहीं है। उच्च-निम्न जातियों के भेद देह को अपना स्वरूप समझने से हैं; परन्तु भगवद्भक्त के लिए ऐसा कोई भेदभाव नहीं रहता। परम गति की प्राप्ति में सभी का अधिकार है। श्रीमद्भागवत में कथन है कि अधमयोनि चाण्डाल तक शुद्धभक्त के सत्संग से शुद्ध हो जाते हैं। भगवद्भक्ति एवं शुद्धभक्त की आश्रयता इतनी शक्तिसम्पन्न है कि इनमें ऊँच-नीच जातियों का कोई भेदभाव नहीं है; कोई भी जीव भक्तिमार्ग को ग्रहण कर सकता है। बिल्कुल विद्याहीन मनुष्य भी यदि शुद्धभक्त का आश्रय ग्रहण करे, तो उसके मार्गदर्शन से शुद्ध हो सकता है। प्राकृतिक गुणों के अनुसार मनुष्यों का चार वर्गों में वर्गीकरण किया गया